



लड़कपन की यादें-8

“अनन्या भी अब उत्तेजित हो चुकी थी इसलिए
तुरन्त अपने सारे कपड़े खोल कर हमारे खेल में
शामिल हो गई और जैसा अभी मूवी में देखा था वैसे
ही घुटनों के बल झुक कर सोनी के पास बैठ कर उसके
उरोज़ चूसने लगी। ...”

Story By: अभिमन्यु सिंह (abhimanyu.mewar)

Posted: Thursday, December 4th, 2014

Categories: [रिश्तों में चुदाई](#)

Online version: [लड़कपन की यादें-8](#)

लड़कपन की यादें-8

अब उसे भी मज़ा आने लगा था इसलिए अब उसकी सिसकारियाँ मादक आवाजों में बदल गई थी- आहूह... अब दर्द कम हो गया है... तुमने सच ही कहा था... पहले दर्द होता है पर बाद में जो मज़ा आता है... वो स्वर्ग के आनन्द से भी बढ़ कर है... करते जाओ... रुकना नहीं... प्लीज... और जोर से... वाओ... फ़क मी.!

मुझे लगा कि मैं अकेला सोनी को संतुष्ट नहीं कर पाऊँगा इसलिए रुक गया और अनन्या को आवाज लगाते हुए कहा- अनन्या... प्लीज आओ ना... हमारी हेल्प करो ना..!

अनन्या भी अब उत्तेजित हो चुकी थी इसलिए तुरन्त अपने सारे कपड़े खोल कर हमारे खेल में शामिल हो गई और जैसा अभी मूवी में देखा था वैसे ही घुटनों के बल झुक कर सोनी के पास बैठ कर उसके उरोज़ चूसने लगी।

अनन्या की योनि अब मेरी तरफ थी इसलिए मैंने अपनी दायें हाथ की उंगली उसकी योनि में डाल दी और अन्दर-बाहर करने लगा।

अब सोनी के साथ अनन्या की मादक सिसकारियाँ रूम में गूँजने लगीं थी।

मैंने सोनी की योनि में अपने प्रहार तेज कर दिए थे।

कुछ ही मिनटों के बाद सोनी तेज उत्तेजक आवाजों के साथ अकड़ कर स्वलित हो गई और मुझे लिंग बाहर निकालने को कहा।

गतांक से आगे.....

मेरा काम अब तक पूरा नहीं हुआ था इसलिए मैंने अपना खून से सना लिंग सुनीता की योनि में से निकाला और घोड़ी बनी अनन्या के पास जाकर उसकी योनि पर हाथ से

पकड़कर टिका दिया और हल्का सा धक्का दिया ।

अनन्या एक बार चौंक कर लगभग चीख उठी पर अगले ही पल सब समझ कर अपनी सहमति जताते हुए अपने गोरे-गोरे नितम्बों को हिला कर मेरे लिंग को अन्दर आने का न्यौता देने लगी जिसे मेरे लिंग ने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

मैंने उसके दोनों नितम्बों पर अपने हाथ रखा और अपने लिंग को अनु की योनि पर रख अन्दर घुसा दिया ।

अनन्या धीरे से चीख उठी पर हल्के से दर्द के बाद आनन्द से मेरे लिंग को अपनी योनि में लेकर अपने नितम्बों को आगे-पीछे कर के उसे अन्दर-बाहर करने लगी तो मैं भी अपने हाथों से इसमें उसकी मदद करने लगा ।

सैक्स की इस मुद्रा में पुरुष को स्त्री से अधिक आनन्द मिलता है और पुरुष का लिंग स्त्री की योनि में अधिक भीतर तक भेदन करता है ।

चुदाई करते हुए मैंने थोड़ा झुककर अपने हाथों से अनन्या के लटकते उरोजों को पकड़ लिया और मसलने लगा जिससे उसकी सिसकारियाँ निकल रही थी ।

कुछ ही देर में मैं थक गया इसलिए लिंग बाहर निकाल कर सीधा लेट गया और अनन्या को अपने ऊपर आने को कहा ।

अनन्या घूम कर मेरे ऊपर सवार हो गई और उसने मेरे तने हुए लिंग को अपनी योनि पर सेट कर भीतर ले लिया और सैक्स की कमान अपने हाथों में ले ली ।

उसने अपने हाथ मेरे सीने पर रख लिए और नितम्ब उचका-उचका कर सैक्स के एक दक्ष खिलाड़ी की भांति अपनी योनि का भेदन करने लगी ।

अब उसकी चुप्पी भी टूटी और वो उत्तेजना से वशीभूत हो मादक आवाजें निकलने लगी-
आहूह... अभी... यह बहुत अच्छा है... आज दर्द भी नहीं और मज़ा भी बहुत आ रहा
है... वाओ... आईई... यू आर सो नाईस अभी... कम ओन... मेरी ब्रेस्ट्स को मसलो...
प्लीज अभी... निचोड़ दो इनको..!

कह कर उसने मेरे हाथ अपने उरोजों पर रख लिये और मैं उसके कटोर उरोजों को दोनों
हाथों से बुरी तरह से मसलने लगा जिसमें उसे असीम आनन्द मिल रहा था।

स्त्रियों को वैसे भी ऊपर रहकर सैक्स करने की मुद्रा में ज्यादा आनन्द आता है क्योंकि
इसमें पुरुष पर और अपने सभी अंगों पर उनका खुद का नियंत्रण रहता है।

कुछ मिनटों तक चली इस मादक रतिक्रीड़ा के बाद दोनों के चरमोत्कर्ष का समय निकट आ
गया था इसलिए मैं अनन्या को नीचे कर उसके ऊपर सवार हो गया और अपने लिंग से
अनन्या के यौवन का तेजी से भेदन करने लगा और पहले अनन्या और कुछ सेकेंडों के बाद
मैं भी स्वलित हो गया।

मैं स्वलित होकर उसके ऊपर ही लेट गया था और हम कुछ देर ऐसे ही लेटे रहे। जब
वासना का ज्वार थोड़ा शांत हुआ तो पता चला कि मेरा वीर्य उसकी योनि में ही छूट गया
है।

वो तुरंत उठकर टॉयलेट की ओर भागी और अपनी योनि को अच्छी तरह से धो कर आई
और सुबक-सुबक कर रोने लगी तो जैसे-तैसे हम दोनों ने उसे चुप कराया, पर सच में तीनों
बहुत डर गये थे कि कहीं अनन्या प्रेग्नेंट नहीं हो जाए।

उन दिनों प्रेग्नेन्सी टेस्ट के लिए आज जैसे आसान किट भी अपलब्ध नहीं थे जिनमें स्त्री-
मूत्र की एक बूँद डालने से प्रेग्नेन्सी टेस्ट हो जाता है इसलिए हम तीनों की हालत खराब

थी कि अब क्या होगा।

तीनों अपने-अपने कमरे में चले गये पर सारा मज़ा काफ़ूर हो गया था, तीनों भविष्य के बारे में सोच-सोच के परेशान हो रहे थे कि जिस खेल को आसानी से चुपचाप खेल रहे थे उसका अब सबको पता चलने वाला था।

कहानी ज़ारी रहेगी।

इस कहानी के सम्बन्ध में अपनी प्रतिक्रिया, आपके कमेंट्स और भाषा सम्बन्धी सुझाव मुझे इमेल पर दें।

आपके कई इमेल मुझे प्राप्त हो रहे हैं और मैं हमेशा प्रयास करता हूँ कि उनका उत्तर भी समय पर दूँ परन्तु यदि किसी कारणवश उत्तर में देरी हो तो क्षमा करें।

मैं कोई दलाल या सैक्स एजेंट नहीं अतः किसी प्रकार का जुगाड़ करने के विषय में न कहें।

Other stories you may be interested in

साली ने घरवाली का सुख दिया

मेरी पिछली कहानी मेरी पहली गांड की चुदाई पड़ोसी अंकल के साथ आपने पढ़ी. मैं आज एक और नई कहानी के साथ उपस्थित हूँ, आशा करता हूँ कि मेरी कहानी आप लोगों को ज़रूर पसंद आएगी, आज मैं मेरी और [...]

[Full Story >>>](#)

आंटी की चूत की चुदाई का मजा

दोस्तो, यह घटना मेरे साथ पहली बार हुई थी. मेरी ये पहली कहानी है आशा करता हूँ कि आप सबको पसंद आएगी. मेरा नाम वरुण है. मेरी उम्र अभी बाईस साल है. मैं अभी चेन्नई में रहता हूँ. मेरे घर [...]

[Full Story >>>](#)

प्यार में पहले सेक्स का मजा

दोस्तो ... मेरा नाम शैलेश है और मैं भोपाल से हूँ. मेरी उम्र 20 साल है. मैं अपनी स्टडी के लिए लखनऊ में रुम लेकर अकेले रह रहा हूँ. मेरे मकान मालिक शाहजहांपुर में रहते थे. ये मैं इस वजह [...]

[Full Story >>>](#)

तीन पत्नी गुलाब-5

ये साली नौकरी भी जिन्दगी के लिए फजीता ही है। यह अजित नारायण (मेरा बॉस) भोंसले नहीं भोसड़ीवाला लगता है। साला एक नंबर का हरामी है। पिछले 4 सालों से कोई पदोन्नति (प्रमोशन) ही नहीं कर रहा है। आज मैं [...]

[Full Story >>>](#)

मम्मीजी आने वाली हैं-5

स्वाति भाभी अब कुछ देर तो ऐसे ही अपनी चूत से मेरे लण्ड पर प्रेमरस की बारिश सी करती रही फिर धीरे धीरे उसके हाथ पैरो की पकड़ ढीली हो गयी। अपने सारे काम ज्वार को मेरे लण्ड पर उगलने [...]

[Full Story >>>](#)

